त्रण लघु पद्य रचनाओ

कर्ता : वाचक विजयशेखरजी

सं. साध्वी समयप्रज्ञाश्री

श्रीनेमिनाथ अने महासती राजीमतीनो तेमज स्थूलिभद्रजी अने गणिका कोशानो प्रणय ए मध्यकालना जैन कविओनो विशिष्ट काव्य-विषय रह्यो छे. आ बन्ने युगलने केन्द्रमां राखीने अढळक काव्यो रचायां छे तेवुं जाणवा मळे छे.

अहीं आ विषयनी ३ अप्रसिद्ध लघु रचनाओ तैयार करी आपवामां आवेल छे. प्रथम रचना 'नेम-राजुलना बारमास' छे. बीजी रचना 'श्रीस्थूलिभद्रनुं चोमासुं' छे. अने त्रीजी रचना 'नेमगीत' नामे छे.

त्रणे रचनामां नायिका एटले के राजीमती अने कोशानो प्रेम, विरहनी व्याकुळता अने छेवटे वैराग्यनी के धर्मनी प्राप्ति ए रीते वर्णन जोवा मळे छे. त्रणेना कर्ता वाचक विजयशेखरजी छे, जेमनो नामोल्लेख दरेक रचनामां छेवटे जोवा मळे छे.

आ रचनाओनी ३ पानांनी प्रत 'कच्छ कोडाय जैन महाजन भण्डार'मां विद्यमान छे, जेनी मने आपवामां आवेली जेरोक्स नकल उपरथी में मारी अल्पबुद्धिए आ सम्पादन करेल छे. भूलचूक के त्रुटि सुधारी लेवा सौने विनंती.

श्रीनेम-राजुलना बारमास

॥ राग-गउडी ॥

काहेकूं नेम रीसाना,
देखत मेरउ चित्त लोभाना,
सुणउ कबू वीनती नाहा,
लेहूं नवला योवन लाहा ॥१॥ का० आंकणी ।

नीकी बराति नेम राजा,
हय गय रथ साथि दिवाजा;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तोरणि आए किउं प्यारे,
पसू-पीरि हरी सिधारे. ॥२॥ का०

प्राणप्रिया किउं जीजइ,
कामबानि करी तन छीजइ;
हठ हठ न करउ रोस वारउ,
आठ भवकी प्रीति संभारउ. ॥३॥ का०

छरुंगी तन पालव मींता
यादव-करि आवि न चींता;
पीया होतउ पूरिन-आसा,
सखीयन मइं काहा करउ हासा. ॥४॥ का०

कबि हुं अबला रीसावि
सो तउ मींल सुजान मनावि
बिन रस चाखि बिरंगी
नांही मूढ गमारि हुं चंगी. ॥५॥ का०

जानी मइं तेरी चतुराई,
चकवी दोरि परि फिरि जाई;
भए रे बिं(वि)देसी कंता,
मोहन विन दुःख अनंता. ॥६॥ का०

अब सखी आयउ हि **साबन**,
मेरउ अंगनउ कीजि पावन;
मधुरा वरसइं मेहा,
कांई दीजि मोही छेहा. ॥७॥ का०

अब सखी **भाद्रव** गाजि,
मेह-झडि मंडी पुहवी साजि;
बीजरी चिहुं दिसिइ चमकि,
पीउ पासि बिना हीउं कमकि. ॥८॥ का०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अब सखी सुंदर **आसो**,
पूरण चंद गयणे उल्लासो;
सरोवरि कमल बहु बिकसइ,
दीवाली कीजि मन हरसे. ॥९॥ का०

अब सखी आएउ **काती**
अरदास करूं गुणि राती;
अन्न न अन्न न भावइं,
कोई कंत सलूणउ मेलावि. ॥१०॥ का०

अब सखी **मागसिरि** भोगो,
काया कोमल साधिउ योगो;
मिश्री गोरस पीजि,
मिली जोडी तिसी फलीजि. ॥११॥ का०

अब सखी **पोस** मइं पोसो,
मोही कूडउ न दाखि दोसो;
दउहिली राति न जाइ,
तारा गणतां मोही विहाइं. ॥१२॥ का०

अब सखी **मांह** कराला,
किउं रहि घरि एकली बाला;
हींम पडि सांत ते वाइ,
बिरहणि कमल कुमलाइ. ॥१३॥ का०

अब सखी **फागुण** रमीइं,
होली खेली दुख सब गमीइं;
ऊडि ऊडि लाल गुलाला,
मुहर्या आंबा अति रसाला. ॥१४॥ का०

अब सखी **चैत्त** मइ चेतो,
करउ करुणा सुख लहुं तेतइं;
कहुंउ कहुउं कोकला बोलइं,
दावानल बिरहउ खोलइ. ॥१५॥ का०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अब सखी नेम **विसाखइं**,
सिद्धि रमणी सिउं चित्त राखइं;
चूया चंदन तपि गाढा,
आयउ स्यामसूंदर बोलइ टाढा. ॥१६॥ का०
अब सखी **जेठा** मासे,
बिन काजि फिरि उदासे;
सूरध पीलू झलवाइ,
क्रीडा कुसमकी करउ मन भाइं. ॥१७॥ का०
अब सखी **आसाढ** सोहि,
गयणे माधव जनमनमोहि;
प्रिउ प्रिउ बोलि बाबीहा,
नेमना विन जाइ दीहा. ॥१८॥ का०
दुःख वीसारन राजे,
पीछई मिलन कि काजे;
श्री गि[र]नारिइ प्रीयु पायउ,
पेखी नयनइं अतिहिं सुहायउ. ॥१९॥ का०
राजुलि राणी सोहागिनि,
करी यदुपति अपनी रागिनि;
नयक न मायउ- न मोहिइ (?)
दोय सिवमिदरिं आरोहइं. ॥२०॥ का०
अजरामर पद सारा,
दोय भोगवि सुख सुविचारा;
मूरति की बलिहारी,
सिवादेवी सुत ब्रह्मचारी. ॥२१॥ का०
नेम राजुंलि पालिउ नेहा,
तिम चतुरा हुंयो गुणगेहा;
राखउ जिनजी सिउं रंगा,
नाम निरमल हि जलगंगा. ॥२२॥ का०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवेकशेखर गणिराया,
लही मोज नमू निति पाया;
विजयशेखर गणि गावि,
बारमासे आनंद पावि. ॥२३॥ का०

इति श्री नेमनाथ-राजेमती बारमास संपूर्णः ॥

श्रीस्थूलिभद्रनुं चोमासूं

॥ राग - मल्हार ॥

सुंदर पाडलीपुर सिरोमणि, नंद नरपति हेंव,
सिकडाल मंत्रीसर घरइं, लाडिली लाछिलदेवे,
तास कूखइ-सरोवर-हंसलइं, चित वालिउ भोग-विलासि,
सिर धरी गुर-सीख आवीयउं रहिउ कोसि-मंदिर चउमासि ॥१॥

सखी आउरे मेरे प्रीतमकूं वेगि वधावि,
हींडोलणि सोहि थूलिभद्र रिषिराज. आंकणी०

चिहुं दिसइं चमकि दामिनी, कोकिला करती सोर,
गगनि रजि मेघ उनयउ, मोदि बोले मोर,
प्रीउ प्रीउ चवि मुखि बाबीहा, विरहणिकुं वधिउ साल,
आसाढि आस्या पुरउ नाहा, कठिन ए वरिषा-काल. ॥२॥ स०

खीण झडि मंडि झरमरि वरसतउ, घनघटा करि अति घोर,
सर भरियां गिर-नीझरण श्रवइं, रतिरायनूं बहु जोर,
हरीयालडी पुहवी भई, विस्तार वेला वास,
मालती केतकी महिमहि, सनेही **श्रावण** मास. ॥३॥ स०

भाद्रवु भोगी मझ दहि, योवन वहि जलधार,
परदेस पीआ पंथीया, पदमनि प्रेम संभारि,
सारंग राग मल्हार सारउ, गाईयइ दोइ गेलि,
पूरवणी कंता प्रीति पालउ, मोहन रहउ मन मेलि. ॥४॥ स०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निरमल नीर **आसोईयइ**, चाहउ चांद्रणी निसि चंद,
सरल विकसइं पोयणी, राजहंस तरइं आनंदि,
कामिनी सरिसी करउ क्रीडा, दीपजोति झमालि,
लील कीजइं लाहउ लीजइं, लखिमी पूरण लाल. ॥५॥ स०
कुतिकी **कातिक** मासि मोरउ, पूरवउ प्रभु कोडि,
मदन मूरति अवतारिउ, रसिक रितु मोर,
योग युगतिइ रमणि तारी, पुहतउ मुनि गुरु पासि,
विजय शेखर गाइ वाचक, थूलिभद्र थिर जास. ॥६॥ स०

इति श्री थूलिभद्रनुं चोमासूं संपूर्ण.

श्रीनेमगीत

॥ राग- गउडी ॥

नेम दीजइं सुरंगी चूनरी, ओढिगी राजुलि नारि रे,
प्रीति ठामि एत हठ क्या कारउ, कंता आई काज मनोहारि रे. ॥१॥ ने०
कारीगरी नखसी बिं दुला, नीकी नवरंगी वणी भाति रे;
जरीनउ मुगताफलि जरी, मनमोहन एती खांति रे... ॥२॥ ने०
अपराध विना ति जायइ नही, देखउ चित अंतरि सांइं रे;
तरकि भरकि डरीयइं नही, कुन सीचसी कामनि कांइ रे... ॥३॥ ने०
पसूया मि कूडउ दाखीयइ, तजी रोती अबला बाल रे;
पुरुषारथ थइं एहु नइही भलउ, करउ सार जू नेम दयाल रे... ॥४॥ ने०
बलि जाउंगी कछू छूझवुं, मेरे मन एही उछाह रे,
योवन-वारी महिकी फली, फूल लागे लेहु लाह रे... ॥५॥ ने०
राजा समुद्रविजय के लाडेले, सामलउ ब्रह्मचारी सामि रे,
मिले **विज(य)शेखर** दोकु प्रीतमां, रंग-मुहलि मुगति अभिराम रे...॥७॥ ने०

इति श्री नेमगीतं ॥

—X—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org